रंगभेद की बेड़ियों से वैश्विक न्याय के शिखर तक: नवी पिल्लै की ऐतिहासिक विजय



उदयपुर। जब दुनिया के अनेक हिस्सों में युद्ध, नस्लीय भेदभाव, राजनीतिक संघर्ष और मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाएँ मानवता को चुनौती दे रही हैं, तब दक्षिण अफ्रीका की भारतीय तमिल मूल की प्रख्यात न्यायविद् नवनीतम 'नवी' पिल्लै को वर्ष 2026 का नोबेल शांति पुरस्कार मिलना न्याय, समानता और मानवीय गरिमा के पक्ष में एक महत्त्वपूर्ण संदेश है। 9 अक्टूबर 2026 को नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने अंतरराष्ट्रीय कानून और न्याय के क्षेत्र में उनके योगदान को सम्मानित किया।

यह सम्मान केवल एक न्यायविद् की व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि उन लोगों के संघर्ष का प्रतीक भी है, जिनकी आवाज को कभी नस्ल, रंग, लिंग, सामाजिक स्थिति और राजनीतिक शक्ति के आधार पर दबाने का प्रयास किया गया। नवी पिल्लै का जीवन बताता है कि अन्याय के सामने मौन रहना अनिवार्य नहीं है और कानून की शक्ति के माध्यम से पीड़ितों को न्याय दिलाने की राह बनाई जा सकती है।

उनकी जीवन-यात्रा का सबसे प्रेरक पक्ष यह है कि जिस समाज में उन्होंने रंगभेद की कठोर वास्तविकताओं का सामना किया, उसी समाज में उन्होंने न्यायिक व्यवस्था के उच्च पदों तक पहुँचकर समानता की नई संभावनाएँ स्थापित कीं। उनका संघर्ष यह संदेश देता है कि शांति केवल युद्धविराम का नाम नहीं, बल्कि ऐसी व्यवस्था का निर्माण है, जिसमें हर मनुष्य को सम्मान और न्याय पाने का समान अधिकार हो।

मेहनाज के अंधकार में न्याय का दीप-

नवी पिल्लै का जन्म 23 सितंबर 1941 को दक्षिण अफ्रीका के डरबन में भारतीय तमिल मूल के परिवार में हुआ। उनके जन्म और बचपन का समय दक्षिण अफ्रीका में नस्लीय भेदभाव की गहरी जड़ों वाला दौर था। रंगभेद की व्यवस्था ने समाज को नस्ल के आधार पर बाँट रखा था और अश्वेतों सहित अनेक समुदायों को समान अवसरों तथा नागरिक अधिकारों से वंचित किया जाता था।

ऐसे वातावरण में पली-बढ़ीं पिल्लै ने कानून को अपने जीवन का माध्यम बनाया। उन्होंने महसूस किया कि सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष केवल भावनात्मक विरोध से नहीं, बल्कि अधिकारों की समझ, संवैधानिक मूल्यों और न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से भी किया जा सकता है।

वर्ष 1967 में उन्होंने अपनी कानूनी प्रैक्टिस शुरू की। रंगभेद विरोधी कार्यकर्ताओं और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे लोगों की कानूनी सहायता करते हुए उन्होंने न्याय को अपने पेशे से आगे बढ़कर सामाजिक उत्तरदायित्व का रूप दिया। उनकी यह यात्रा उस विश्वास को मजबूत करती है कि एक जागरूक विधिवेत्ता व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर करने और वंचितों की आवाज बुलंद करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

नवी पिल्लै का जीवन उन युवाओं के लिए भी प्रेरणा है, जो सामाजिक असमानताओं को देखकर परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं। उनकी कहानी सिखाती है कि परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों, ज्ञान, साहस और निरंतर प्रयास के माध्यम से परिवर्तन की दिशा में कदम बढ़ाए जा सकते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के न्यायिक इतिहास में ऐतिहासिक उपलब्धि-

वर्ष 1995 में नवी पिल्लै दक्षिण अफ्रीका के उच्च न्यायालय में नियुक्त होने वाली पहली अश्वेत महिला न्यायाधीश बनीं। यह उपलब्धि उस देश के लिए विशेष महत्त्व रखती थी, जहाँ नस्लीय भेदभाव ने लंबे समय तक अवसरों और संस्थागत प्रतिनिधित्व को सीमित किया था।

उनकी नियुक्ति केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं थी। यह उस परिवर्तन का प्रतीक थी, जिसमें कभी भेदभाव का सामना करने वाले समुदायों के लोग न्यायिक संस्थाओं में महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाने लगे थे।

न्यायपालिका में उनकी उपस्थिति ने समान अवसरों और प्रतिनिधित्व के महत्त्व को रेखांकित किया। इससे यह संदेश भी सामने आया कि किसी व्यक्ति की योग्यता का निर्धारण उसकी नस्ल, जातीय पहचान या सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी क्षमता, निष्पक्षता और कार्य के आधार पर होना चाहिए।

रवांडा नरसंहार और अंतरराष्ट्रीय न्याय की नई दिशा-

नवी पिल्लै की अंतरराष्ट्रीय पहचान को व्यापक बनाने में रवांडा के लिए स्थापित अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायाधिकरण में उनकी भूमिका का विशेष महत्त्व रहा। वर्ष 1995 में वे इस न्यायाधिकरण की न्यायाधीश बनीं और बाद में इसकी अध्यक्षता भी की। इस न्यायाधिकरण का दायित्व 1994 के रवांडा नरसंहार से जुड़े गंभीर अपराधों की सुनवाई करना था।

रवांडा में हुई हिंसा ने विश्व समुदाय को यह सोचने के लिए विवश किया कि सामूहिक अत्याचारों, यौन हिंसा और मानवता को झकझोर देने वाले अपराधों के लिए जिम्मेदारी कैसे निर्धारित की जाए। ऐसे मामलों में न्याय केवल कानूनी औपचारिकता नहीं होता; वह पीड़ितों की पीड़ा को स्वीकार करने और अपराधियों को जवाबदेह ठहराने की प्रक्रिया भी होता है।

इस संदर्भ में अकायेसू मामले का ऐतिहासिक महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस मामले में अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण ने निर्धारित परिस्थितियों में यौन हिंसा को नरसंहार के अपराध का हिस्सा मानने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कानूनी सिद्धांत स्थापित किया। इस निर्णय ने अंतरराष्ट्रीय आपराधिक कानून में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की गंभीरता को समझने और संबोधित करने की राह मजबूत की।

इस ऐतिहासिक प्रगति का संदेश स्पष्ट था– युद्ध और सामूहिक हिंसा के दौरान महिलाओं के शरीर तथा गरिमा को निशाना बनाना कोई गौण अपराध नहीं है। ऐसे अत्याचारों को भी गंभीरता से लिया जाना चाहिए और उनके लिए जवाबदेही सुनिश्चित होनी चाहिए।

नवी पिल्लै की भूमिका ने अंतरराष्ट्रीय न्याय व्यवस्था में इस विचार को बल दिया कि पीड़ितों की पहचान, लिंग या सामाजिक स्थिति के कारण उनके साथ हुए अपराधों को कम महत्त्व नहीं दिया जा सकता।

संयुक्त राष्ट्र में मानवाधिकारों की मुखर आवाज-

वर्ष 2008 से 2014 तक नवी पिल्लै ने संयुक्त राष्ट्र के मानवाधिकार उच्चायुक्त के रूप में कार्य किया। इस भूमिका में उन्होंने नागरिक स्वतंत्रता, नस्लीय भेदभाव, महिलाओं के अधिकारों और कमजोर समुदायों की सुरक्षा जैसे विषयों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम किया।

उनके कार्य का केंद्रीय विचार यह रहा कि मानवाधिकार किसी सरकार की कृपा से मिलने वाला उपहार नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा से जुड़े सार्वभौमिक अधिकार हैं। सरकारों और संस्थाओं का दायित्व है कि वे इन अधिकारों का सम्मान करें, उनके उल्लंघन की निष्पक्ष जाँच कराएँ और दोषियों की जवाबदेही सुनिश्चित करें।

मानवाधिकारों की रक्षा का प्रश्न तब और गंभीर हो जाता है, जब किसी व्यक्ति या समुदाय की आवाज राजनीतिक हितों, सामाजिक पूर्वाग्रहों अथवा संस्थागत दबावों के कारण अनसुनी कर दी जाती है। ऐसे समय में स्वतंत्र संस्थाओं और निष्पक्ष जाँच की आवश्यकता बढ़ जाती है।

पिल्लै की अंतरराष्ट्रीय भूमिका इसी व्यापक विमर्श से जुड़ी रही। उनके कार्यकाल ने इस बात को रेखांकित किया कि मानवाधिकारों की रक्षा केवल किसी एक देश की आंतरिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि वैश्विक समुदाय की साझा चिंता भी है।

इजरायल-फलस्तीन विवाद और जवाबदेही की बहस-

नवी पिल्लै के सार्वजनिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण और विवादास्पद अध्याय इजरायल तथा फलस्तीन से संबंधित मानवाधिकार प्रश्नों की जाँच से भी जुड़ा है। वर्ष 2021 से 2025 तक उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय जाँच आयोग की अध्यक्षता की, जो कब्जे वाले फलस्तीनी क्षेत्र, पूर्वी यरुशलम सहित, और इजरायल से संबंधित मामलों की जाँच कर रहा था।

गाजा में कथित नरसंहार और अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन से जुड़े निष्कर्षों ने व्यापक अंतरराष्ट्रीय बहस को जन्म दिया। इजरायल ने संबंधित आरोपों और निष्कर्षों का विरोध किया। इस विषय पर विभिन्न देशों और पक्षों के बीच मतभेद बने रहे।

ऐसे विवादों का निष्पक्ष मूल्यांकन करते समय आरोप, जाँच के निष्कर्ष और न्यायालय द्वारा स्थापित कानूनी जिम्मेदारी के बीच अंतर बनाए रखना आवश्यक है। किसी भी गंभीर आरोप का अंतिम मूल्यांकन विश्वसनीय साक्ष्यों, लागू कानून और निष्पक्ष प्रक्रिया के आधार पर होना चाहिए।

फिर भी इस विवाद से एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है–क्या अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ शक्तिशाली देशों और राजनीतिक हितों से जुड़े मामलों की जाँच स्वतंत्र रूप से कर सकती हैं? क्या कानून के सामने सभी पक्षों की जवाबदेही समान रूप से सुनिश्चित हो सकती है?

यही प्रश्न नवी पिल्लै की न्यायिक विरासत को समकालीन विश्व के लिए प्रासंगिक बनाते हैं। न्याय की विश्वसनीयता केवल निर्णय के परिणाम में नहीं, बल्कि उस प्रक्रिया की निष्पक्षता, पारदर्शिता और प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण में भी निहित होती है।

नोबेल सम्मान का व्यापक मानवीय संदेश-

9 अक्टूबर 2026 को नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा के बाद नवी पिल्लै का नाम अंतरराष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में आया। उनके जीवन और कार्यों ने एक बार फिर यह प्रश्न सामने रखा कि विश्व शांति की स्थापना में न्यायिक संस्थाओं, मानवाधिकारों और अंतरराष्ट्रीय कानून की क्या भूमिका हो सकती है।

इस सम्मान का अर्थ केवल किसी व्यक्ति के लंबे सार्वजनिक जीवन की उपलब्धियों का उत्सव नहीं है। यह उन मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जिनके बिना किसी भी सभ्य समाज की कल्पना अधूरी है–समानता, स्वतंत्रता, निष्पक्षता, जवाबदेही और मानवीय गरिमा।

नोबेल शांति पुरस्कार जैसे सम्मान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा अवश्य प्रदान करते हैं, लेकिन उनकी वास्तविक सार्थकता तब बढ़ती है, जब वे समाजों और सरकारों को अपने आचरण पर विचार करने के लिए प्रेरित करें। यदि न्याय केवल कमजोरों के लिए कठोर और शक्तिशाली लोगों के लिए लचीला बना रहे, तो कानून के प्रति विश्वास कमजोर पड़ने लगता है।

इसीलिए नवी पिल्लै की उपलब्धि का मूल्यांकन किसी एक राजनीतिक विवाद या किसी एक पुरस्कार तक सीमित करके नहीं किया जाना चाहिए। उनके दशकों लंबे न्यायिक और मानवाधिकार संबंधी कार्यों से यह समझने का अवसर मिलता है कि अंतरराष्ट्रीय न्याय व्यवस्था किन उपलब्धियों, चुनौतियों और सीमाओं के बीच आगे बढ़ती है।

भारतीय मूल की बेटी, वैश्विक मानवता की प्रेरणा-

नवी पिल्लै की भारतीय तमिल मूल की पारिवारिक पृष्ठभूमि भारत के पाठकों के लिए स्वाभाविक रूप से आकर्षण और आत्मीयता का विषय है। उनका जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ और उनकी कर्मभूमि ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय न्याय व्यवस्था की प्रमुख हस्तियों में स्थान दिलाया।

उनकी उपलब्धि का वास्तविक महत्त्व उनकी जातीय अथवा पारिवारिक पहचान से आगे बढ़कर उस योगदान में है, जो उन्होंने कानून, मानवाधिकार और न्यायिक संस्थाओं के क्षेत्र में दिया।

भारत जैसे विविधतापूर्ण लोकतंत्र के लिए भी उनकी जीवन-यात्रा कई महत्त्वपूर्ण संदेश प्रस्तुत करती है। सामाजिक सद्भाव, समान अवसर, महिलाओं की सुरक्षा, कमजोर वर्गों के अधिकार और कानून के प्रति सम्मान किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के आधार हैं।

विद्यार्थियों के लिए उनकी कहानी बताती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत सफलता अर्जित करना नहीं, बल्कि समाज को अधिक न्यायपूर्ण बनाने में योगदान देना भी है। शिक्षकों के लिए यह प्रेरणा है कि वे विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, विवेक और समानता के संस्कार विकसित करें। पत्रकारों के लिए यह स्मरण है कि सत्ता और समाज से जुड़े प्रश्नों पर तथ्यपरक तथा निष्पक्ष दृष्टिकोण बनाए रखना आवश्यक है। विधि के विद्यार्थियों और अधिवक्ताओं के लिए यह उदाहरण है कि कानून को केवल पेशे के रूप में नहीं, बल्कि सार्वजनिक उत्तरदायित्व के माध्यम के रूप में भी देखा जा सकता है।

शांति का अर्थ केवल युद्ध का अंत नहीं-

आज विश्व के अनेक क्षेत्रों में जारी संघर्ष यह प्रश्न उठाते हैं कि क्या केवल युद्धविराम से स्थायी शांति स्थापित की जा सकती है। यदि युद्ध के बाद भी भय, विस्थापन, भेदभाव और अन्याय बना रहता है, तो शांति का उद्देश्य अधूरा ही रहेगा।

स्थायी शांति के लिए संवाद और कूटनीति आवश्यक हैं, लेकिन इनके साथ नागरिकों की सुरक्षा, मानवीय सहायता, स्वतंत्र न्यायिक संस्थाएँ और गंभीर अपराधों की निष्पक्ष जाँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं।

अंतरराष्ट्रीय कानून की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसका पालन सभी पक्षों से अपेक्षित हो। किसी देश की शक्ति, किसी सरकार का राजनीतिक प्रभाव या किसी व्यक्ति का सामाजिक पद उसे कानून से ऊपर नहीं बना सकता। साथ ही, न्याय के नाम पर किसी को पूर्वनिर्धारित दोषी मान लेना भी उचित नहीं है। निष्पक्षता, साक्ष्य और विधिसम्मत प्रक्रिया ही न्याय की विश्वसनीयता के आधार हैं।

नवी पिल्लै की जीवन-यात्रा इस संतुलन का महत्त्व समझने का अवसर देती है। वह याद दिलाती है कि न्याय के लिए साहस आवश्यक है, लेकिन उस साहस को कानून, प्रमाण और निष्पक्षता के साथ आगे बढ़ाना भी उतना ही जरूरी है।

न्याय की मशाल जलती रहनी चाहिए-

नवी पिल्लै की कहानी किसी एक व्यक्ति के संघर्ष की कहानी भर नहीं है। यह उस विश्वास की कहानी है कि अन्याय कितना भी गहरा क्यों न हो, उसके विरुद्ध आवाज उठाने वाले लोगों के प्रयास परिवर्तन की संभावनाएँ पैदा कर सकते हैं।

रंगभेद से प्रभावित समाज में कानूनी संघर्ष शुरू करने वाली एक महिला का अंतरराष्ट्रीय न्याय व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान तक पहुँचना स्वयं में प्रेरणादायी है। उनकी यात्रा बताती है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए केवल विरोध पर्याप्त नहीं; उसके साथ ज्ञान, धैर्य, संस्थागत प्रतिबद्धता और नैतिक साहस भी आवश्यक हैं।

नोबेल शांति पुरस्कार का वास्तविक संदेश भी इसी विचार में निहित है। शांति की रक्षा केवल सीमाओं पर तैनात सैनिकों, राजनयिक समझौतों और राजनीतिक घोषणाओं से नहीं होती। उसकी मजबूत नींव न्यायालयों की स्वतंत्रता, कानून के समान अनुप्रयोग, मानवाधिकारों के सम्मान और पीड़ितों को न्याय दिलाने की प्रतिबद्धता से तैयार होती है।

जब दुनिया की व्यवस्था शक्ति के प्रदर्शन के बजाय न्याय के सिद्धांतों को महत्त्व देगी, जब किसी मनुष्य की गरिमा को राजनीतिक लाभ से ऊपर रखा जाएगा और जब गंभीर अपराधों की जाँच बिना भेदभाव के होगी, तभी स्थायी शांति की दिशा में वास्तविक प्रगति संभव होगी।

नवी पिल्लै की जीवन-यात्रा का सबसे बड़ा संदेश यही है–न्याय कोई विशेषाधिकार नहीं, मानवता का अधिकार है; शांति कोई थोपी हुई चुप्पी नहीं, बल्कि गरिमा और समानता पर आधारित व्यवस्था है। जिस दिन दुनिया इस सत्य को अपने आचरण में उतार लेगी, उस दिन न्याय की मशाल केवल अदालतों में नहीं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में प्रकाश फैलाएगी।

सत्य भूषण शर्मा ङ्क प्रवक्ता, पत्रकार, लेखक, कवि एवं यूट्यूबर
बी-107, दिव्य ज्योति अपार्टमेंट, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर - 313001 (राजस्थान)

परमवीर चक्र विजेता कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव ने साझा किए कारगिल विजय के वीरतापूर्ण अनुभव

गाजियाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग केंद्र, पार्श्वनाथ पैराडाइज़, मोहन नगर, गाजियाबाद में परमवीर चक्र से सम्मानित कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव के आगमन पर विशेष प्रेरणादायी कार्यक्रम आयोजित किया गया।



इस अवसर पर उन्होंने कारगिल युद्ध के दौरान अपने टाइगर हिल पर कठिनतम परिस्थिति में दुश्मनों को भगाकर विजय पाने के अनुभव साझा करते हुए देश की रक्षा के लिए भारतीय सैनिकों द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस, त्याग, अनुशासन और राष्ट्रप्रेम की प्रेरणादायी गाथा सुनाई।

कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव ने कारगिल युद्ध के चुनौतीपूर्ण क्षणों का स्मरण करते हुए बताया कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ संकल्प, कर्तव्यनिष्ठा, पराक्रमा पर विश्वास और देश के प्रति समर्पण से विजय का मार्ग प्रशस्त होता है। उनके अनुभवों ने उपस्थित लोगों में राष्ट्र के प्रति सम्मान, देशभक्ति और सैनिकों के प्रति कृतज्ञता की भावना को और सुदृढ़ किया।

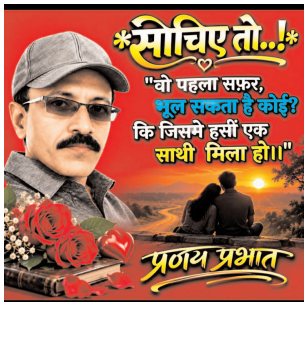
इस अवसर पर भाजपा नेता एवं सामाजिक कार्यकर्ता राजेन्द्र त्यागी, ऋषि त्यागी तथा ब्रह्माकुमारीज़ के अन्य प्रतिनिधियों ने उनका स्वागत किया। केन्द्र संचालिका बी के लवली दीदी ने कहा कि देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले वीर सैनिक राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। सैनिकों का साहस हमें बाहरी चुनौतियों का सामना करना सिखाता है, वहीं राजयोग ध्यान मन को शांत, एकाग्र और शक्तिशाली बनाकर जीवन की आंतरिक चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देता है। उन्होंने राजयोग ध्यान, सकारात्मक चिंतन, आत्मबल और मानसिक शांति के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

उपस्थित लोगों ने कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव के अनुभवों को उत्साहपूर्वक सुना तथा उनके अदम्य साहस और राष्ट्रसेवा के प्रति सम्मान व्यक्त किया।

इस अवसर पर पूर्व सेनाधिकारी कर्नल बिष्ट ने परमवीर चक्र विजेता योगेन्द्र सिंह को का धन्यवाद करते हुए उनके अदम्य साहस, समर्पण, राष्ट्रप्रेम को युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बताया। इस अवसर पर संतोष मेडिकल कॉलेज की डॉ सुषमा, श्री जगन्नाथ अस्पताल से डॉ नवीन तथा अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संदेश राष्ट्रप्रेम, अनुशासन, आत्मबल और दृढ़ संकल्प से प्रत्येक चुनौती का सामना करने की प्रेरणा से भरपूर था। देश के वीर सैनिकों का जीवन हम सभी को अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन पूर्व भारतीय वायुसेना अधिकारी रमेश पंत ने किया।



हास-परिहास

चार दिन की चांदनी....

मौसम बदल रहा है। श्राद्ध गये, त्योंहारो का मौसम आने वाला है। दशहरा, दिवाली सर पर आ खड़े हुये हैं। खुशी के मौसम पर मिष्ठान का आदान- प्रदान स्वाभाविक प्रक्रिया है। मिठाई की दुकानों पर ग्राहकों की रेलमपेल मची रहेगी। बस ठीक इसी समय खाद्य विभाग के अफसर कुंभकर्णी नींद से जागेंगे। वक्त-बेवक्त प्रतिष्ठानों पर छापे पड़ेंगे। मिठाईयाँ सील करी जागेगी। खोया, पनीर के सैंपल उठाये जायेंगे। बस त्योंहारो पर जन स्वास्थ्य की फिक्र लगेगी वो बात और है कि बाकी वक्त तनख्वाह यूँ ही लेते रहेंगे। पूरे साल नकली दूध, पनीर, खोया बिकते रहते हैं और विभाग सोया रहता है। शुभ अवसरों पर ही सही, बेलाग चिंता तो करते हैं वर्ना इनके बाप का क्या जाता है, जेब गर्म होती है वो अलग बात है क्योंकि इनके हिसाब से तनख्वाह से गुजारा कहाँ होता जबकि अन्य सारी मुफ्तिया सुविधाओं का हस्तक्षेप अवश्य होता है। ये सब तो इनका हक है वो बात और है कि कर्तव्य की चिंता किसे है। उनकी सुख सुविधाओं का विधान पक्का है जन सुविधायें गई तेल लेने। बस चार दिन की चांदनी है...!

हादसा या दुर्घटना होने की देर है, सारे विभाग सजग हो कार्यवाही की प्रक्रिया चालू कर देते हैं वर्ना किसी को क्या पड़ी है चैकिंग करने की, दुनिया चल रही है चलती रहेगी। आग लगे या मकान धसे , फटाफट अन्य सैकड़ों को नोटिस थमा दिये जाते हैं। कुछ समय के लिए पूर्ण सजगता से जाँच चालू हो जाती है, कुछ समय पश्चात वही ढाक के तीन पात। प्रारंभ से चैकिंग रहे तो हादसे हो ही क्यों..? नवशे बनते हैं मगर कागजों में बाकी तो सब सैट है। सुनने में आया है कि सौ स्क्वायर मीटर की छत ढलाई पर ठेकेदार तय राशि विभाग को पंहुचा देता है जो तय अनुपात में ऊपर तक जाती है। ऐसे में नियम गये भाड़ में। कुछ हुआ तो जग गये वर्ना सोना तो आदत में शुमार है क्योंकि चांदनी तो चार दिन की ही होती है....!



आजकल नया महौत्सव प्रारंभ हो गया है सारा देश धरना प्रदर्शन मय हो गया है। कोने कोने में धरने प्रदर्शन ही रहे हैं। मुद्दा एक ही है मुख्य चुनाव आयुक्त का इस्तीफा। या फिर बर्खास्त करे जो हो नहीं सकता। हटाना है तो संसद में महाभियोग प्रस्ताव लाये। इस टर्म में लाने का कोई लाभ नहीं क्योंकि संसद मे पर्याप्त संख्या नहीं है इसलिए संसद में जाते नहीं, वहाँ बोलते नहीं और सड़क पर इनके भक्त कार्यकर्ताओं के सिवाय कोई सुनता नहीं।

तिलचट्टे न तीन में न तेरह में। जन आंदोलन के बहाने फोटो सैशन के अलावा कुछ खास नहीं है। जनता के मामलों से इनका लेना देना नही। गोल पोस्ट चैंज करना इनका धर्म रह गया है। भीड़ इकठ्ठा करो जिससे आम जनता को तकलीफ है। जगह जगह जाम का मंजर है। मैट्रो स्टेशन बंद कर दिये गये। लंबे रूट की गाड़ियां तक कैंसल कर दी ताकि मुसीबत जनता झेले। इनका क्या, ये तो एसी में बैठकर प्लानिंग कर लेते हैं।

जब केजरीवाल सत्ता में आये थे तब डाटा दिया था कि तीन लाख अठारह हजार कुछ सौ वोटरों के नाम करीब बारह लाख वोटर कार्ड बनाये हुये हैं। ऐसे में शुद्धिकरण में वोट तो कटेंगे ही। कह रहे स्ट्रक्कैंसल करो तो क्या मरे हुये लोग दोबारा वोट देंगे। जो स्थानांतरित हो गये वो भी जब चाहे जहाँ चाहे वोट देकर मजे लेंगे।

हाथ में संविधान की प्रति लहराने से कुछ नहीं होता। उसे पढना भी जरूरी है, समझना भी जरूरी है मगर नहीं मात्र लहरा कर एक्सपर्ट हो जाने का स्वांग रचते हैं। संविधान बदल रहे हैं का नारा काम नहीं कर सकता। मामला सुप्रीम कोर्ट में है...!

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने की देर है क्योंकि दस दिन में चुनाव आयोग से जवाब मांगा है। नौकरी पर बड़ा ना लगे इस उद्देश्य से कोर्ट में तीनों आयुक्त एक हो जायेंगे कि फैसले सर्व सम्मति से लिए गये। फोमं छह पर भी स्टेट मेंट आयेगा मय प्रमाण कि कोई बदलाव नहीं जो है सब विधि सम्मत है। कहने को बचेगा क्या, सोडे के झाग बैठते हैं वैसे ही मामला टांय टांय फिस्स..!

शादी हुई, प्रीति भोज का भोग लग गया फिर तुरंत तलाक की बात करना उतना ही बेमानी है जत्ना चुनाव पश्चात एसआईआर का कैंसल होना। जबकि सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर को विधि सम्मत करार दिया गया है, इसे आयोग का वैधानिक अधिकार बताया गया है। काश...! जिनके वोट कटे हैं वे सामने आकर प्रोटेस्ट करते तो असर कारगर होता। इतनी बड़ी प्रक्रिया में भूले स्वाभाविक है, भूल सुधार के प्रावधान है और सुधारा भी जा रहा है...!

तिलचट्टे कह रहे हैं कि प्रदर्शन जारी रहेगा। हम जहाँ मजीं बैठ जायेंगे, किसी भी परमीशन की आवश्यकता नहीं है, बस हम सूचित कर सकते हैं वो हमने कर दिया है।परंतु प्रदर्शन अराजक न हो जैसी इनकी मनसा लग रही है डर है तो सिर्फ इस बात का जिसके चांस अधिक है इसलिए पुलिस व्यवस्था में परमीशन का प्रावधान है। परमीशन में बताना होता है कि कितने लोग आयेंगे,अवधि ऐर अन्य सूचनाओं का जबाब देना होता है। ना नौ मन तेल होना ना राधा नाचनी।धरने प्रदर्शन कुछ दिन चल सकते हैं। फिर वही बात इसलिए ये है चार दिन की चांदनी है

- छत्र छाजेड़ फक्कड़
बी -76 आनंद विहार दिल्ली - 110092
मो. -9350051179